INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 6 | JULY – 2026

भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में गाँधी दर्शन की चेतना का अध्ययन

अभिमन्यु तिवारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.)

डॉ. राजेन्द्र कुमार द्विवेदी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.)

सारांश –

भवानी प्रसाद मिश्र आधुनिक हिंदी कविता के उन विशिष्ट कवियों में हैं जिनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, लोकजीवन और गांधीवादी जीवन–दृष्टि का अत्यंत प्रभावशाली समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने कविता को केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम न मानकर सामाजिक जागरण, नैतिक पुनर्निर्माण और मानवीय मूल्यों की स्थापना का प्रभावी साधन बनाया। उनके काव्य में महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, स्वदेशी, श्रम, सादगी, नैतिकता तथा सर्वोदय जैसे आदर्श जीवन्त रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। भवानी प्रसाद मिश्र ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में व्याप्त हिंसा, असमानता, शोषण, भ्रष्टाचार तथा नैतिक पतन का विरोध करते हुए मनुष्य को सत्य और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। प्रस्तुत शोध–पत्र में भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में गांधी दर्शन की चेतना का विश्लेषण किया गया है। इसमें गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख तत्वों तथा उनके काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। शोध से स्पष्ट होता है कि भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य गांधीवादी चिंतन का सशक्त साहित्यिक रूप है, जो आज भी सामाजिक समरसता, नैतिकता और मानवीय चेतना के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द – भवानी प्रसाद मिश्र, गांधी दर्शन, सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, सर्वोदय, मानवतावाद, सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्य, हिंदी कविता।

प्रस्तावना –

आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख कवियों में भवानी प्रसाद मिश्र का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने कविता को केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति न मानकर समाज, संस्कृति और मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन का प्रभावी माध्यम बनाया। उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन–दृष्टि, लोकचेतना, नैतिकता तथा मानवता के प्रति गहरी आस्था दिखाई देती है। वे ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपने जीवन और साहित्य दोनों में सत्य, सादगी तथा मानवीय संवेदनाओं को सर्वोच्च महत्व दिया। यही कारण है कि उनके काव्य में गांधीवादी दर्शन का प्रभाव अत्यंत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

महात्मा गांधी का दर्शन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि वह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान का व्यापक दर्शन है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, स्वदेशी, स्वावलंबन, श्रम की गरिमा, नैतिकता तथा सर्वोदय गांधी चिंतन के प्रमुख आधार हैं। गांधीजी का विश्वास था कि समाज का वास्तविक विकास तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा हो और सामाजिक संबंध समानता, सहयोग तथा सद्भाव पर आधारित हों। इन आदर्शों ने हिंदी साहित्य के अनेक रचनाकारों को प्रभावित किया, जिनमें भवानी प्रसाद मिश्र का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भवानी प्रसाद मिश्र गांधीजी के व्यक्तित्व एवं विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने गांधीवादी मूल्यों को केवल सैद्धांतिक रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि अपने जीवन और साहित्य में उन्हें व्यवहारिक रूप प्रदान किया। उनकी कविताओं में सत्य के प्रति अटूट आस्था, अहिंसा का समर्थन, श्रम के प्रति सम्मान, सादगीपूर्ण जीवन, नैतिकता तथा मानव–प्रेम की भावना बार–बार अभिव्यक्त होती है। उनका काव्य इस बात का प्रमाण है कि साहित्य सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी साधन बन सकता है।

भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य–भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक और लोकजीवन के निकट है। उन्होंने कठिन एवं कृत्रिम भाषा के स्थान पर बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया, जिससे उनकी कविताएँ सामान्य जन तक सहजता से पहुँचीं। उनकी भाषा में भारतीय संस्कृति की आत्मीयता तथा गांधीजी की सादगी का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। यही विशेषता उनके काव्य को जनसाधारण के बीच लोकप्रिय बनाती है। उनकी कविताओं में शोषण, हिंसा, असमानता, अन्याय, भ्रष्टाचार और नैतिक पतन के विरुद्ध स्पष्ट स्वर सुनाई देता है। वे मनुष्य के भीतर प्रेम, करुणा, सहिष्णुता और आत्मसंयम जैसे गुणों के विकास पर बल देते हैं। उनका मानना है कि सामाजिक परिवर्तन केवल बाहरी व्यवस्थाओं से नहीं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक परिवर्तन से संभव है। यह दृष्टिकोण गांधी दर्शन का मूल आधार भी है।

भवानी प्रसाद मिश्र ने किसान, मजदूर, ग्रामीण समाज तथा उपेक्षित वर्ग के जीवन–संघर्षों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। वे समाज के अंतिम व्यक्ति के सम्मान और अधिकार की बात करते हैं, जो गांधीजी के सर्वोदय और अंत्योदय की अवधारणा के अनुरूप है। उनके काव्य में लोककल्याण, सामाजिक समरसता तथा मानवीय समानता की भावना प्रमुख रूप से व्यक्त हुई है। वर्तमान समय में जब समाज हिंसा, उपभोक्तावाद, नैतिक संकट, पर्यावरणीय असंतुलन तथा सामाजिक विघटन जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब भवानी प्रसाद मिश्र का गांधीवादी काव्य नई दिशा और प्रेरणा प्रदान करता है। उनकी रचनाएँ केवल साहित्यिक उपलब्धियाँ नहीं हैं, बल्कि मानवीय मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक जीवन के लिए प्रेरक दस्तावेज भी हैं। इसलिए उनका काव्य आज भी समान रूप से प्रासंगिक और मार्गदर्शक है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में निहित गांधी दर्शन की चेतना का समग्र अध्ययन किया गया है। इसमें सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, स्वावलंबन, श्रम की प्रतिष्ठा, सर्वोदय, नैतिकता, मानवतावाद तथा लोकमंगल जैसे गांधीवादी मूल्यों का उनके काव्य के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि उनके साहित्य में व्यक्त गांधीवादी चेतना समकालीन समाज के लिए किस प्रकार प्रेरणास्पद एवं प्रासंगिक है।

विश्लेषण –

गांधीवादी दर्शन हिन्दी कविता में प्रारंभ से ही व्यक्त होता रहा है। समय के बदलाव के साथ जब हम स्वयं को भूलने लगे, तो गांधी–दर्शन ने हमारी धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं को हमारे समक्ष रखकर हमें जागृत किया और हिन्दी के कवियों ने उनके विचारों को अपनी कविताओं के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाया।

जब महात्मा गांधी का भारत में आगमन हुआ, उस समय हिन्दी साहित्य में द्विवेदी युग अपने अंतिम पड़ाव में था और छायावाद आकार ग्रहण कर रहा था। छायावाद युग में भी द्विवेदी युगीन रचनाएँ होती रहीं। इसलिए छायावाद और छायावादोत्तर कवियों के साथ–साथ द्विवेदी युगीन कवि भी गांधी–दर्शन से प्रभावित हुए और यह दर्शन उनकी रचनाओं में उभरकर सामने आया।

द्विवेदी युग की कविता दो दशकों में विकसित होती हुई गांधी–दर्शन का संस्पर्श पाकर अधिक सूक्ष्म हुई और मानव–जीवन के निकट आ गई। छायावादी कवि की वैयक्तिकता गांधीवाद से प्रभावित होकर सामाजिकता

की राह पर चल पड़ी। छायावादोत्तर काल में मार्क्स के विचारों से प्रभावित प्रगतिवादी कवियों पर भी गांधी–दर्शन की विचारधारा का आंशिक प्रभाव दिखाई पड़ता है। इसके अतिरिक्त नई कविता के साथ–साथ आद्यतन हिन्दी कविता पर भी गांधी–दर्शन का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

आधुनिक काव्य में गांधीवादी दर्शन –

हिन्दी कविता में गांधीवाद के व्यापक प्रभाव को दो रूपों में देखा जा सकता है। प्रथम के अन्तर्गत गांधीजी के व्यक्तित्व अथवा कर्म सौन्दर्य पर मुग्ध होकर प्रशस्तिपरक साहित्य का सृजन हुआ तो, द्वितीय के अन्तर्गत गांधी का प्रभाव उनके विचार दर्शन केमाध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। यद्यपि हिन्दी कविता में गांधीवादी दर्शन का प्रारंभद्विवेदी युग में हुआ, तथापि भारतेन्दु युग में भारतेन्दु व अन्य साहित्यकारों ने गांधीवाद की उपयुक्त पृष्ठभूमि का सृजन किया। गांधीवादी दर्शन के अनेक सिद्धान्त जैसे राष्ट्रीय आन्दोलन, स्वदेशी वस्तुओं का व्यवहार अस्पृश्यता निवारण तथा मानव मूल्यों का सजीव चित्रण भारतेन्दु युग की कविता में हुआ है। भारतेन्दु रचित 'भारतेन्दु ग्रन्थावली', प्रतापनारायण मिश्र रचित 'महापर्व', अम्बिकादन व्यास रचित 'भारत धर्म' आदि रचनाओं में उपर्युक्त विषयों का रूपायन हुआ है। अतः हम कह सकते हैं कि द्विवेदी व छायावादी युग के अनेक गांधीवादी कवियों के प्रेरणास्रोत भारतेन्दु और उस युग के कवि रहे हैं।

द्विवेदी युगीन काव्य में गांधीवादी दर्शन का प्रारंभ –

द्विवेदी युग में अंग्रेज साम्राज्यवादियों की कूटनीति अपने चरम पर थी, जिसका प्रतिकार महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के बल पर किया। स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के नेतृत्व में चलने वाले अहिंसात्मक आंदोलन का साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा। द्विवेदी युग में गांधीजी के नेतृत्व में एक तरफ राजनीतिक चेतना जागृत हो रही थी, तो दूसरी तरफ सांस्कृतिक पुनरुत्थान का कार्य हो रहा था।

ऐसी स्थिति में द्विवेदी युगीन कवि मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी तथा श्रीधर पाठक आदि पर गांधी–विचारधारा का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

महात्मा गांधी का समस्त दर्शन सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्य का साक्षात्कार ही उनके जीवन का लक्ष्य था और अहिंसा इस लक्ष्य तक पहुँचने का साधन। द्विवेदी युगीन कवि मैथिलीशरण गुप्त सत्य को संसार के सभी धर्मों का मूल मानते हुए उस पर सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार हैं –

"सत्य से ही स्थिर है संसार, सत्य ही सब धर्मो का सार,
राज्य ही नहीं प्राण परिवार, सत्य पर सकता हूँ सब वार"[1]

गांधीजी के अनुसार अहिंसा परम धर्म है। मानव कल्याण के लिए प्रेम और अहिंसा ही एकमात्र उपाय है। मैथिलीशरण गुप्त अहिंसा–सिद्धान्त को विचारपूर्वक अपनाने का आग्रह करते हुए कहते हैं –

"तुम मेरे अनुगामी, यह तो मुझ पर प्यार तुम्हारा,
पर विरोध करने का पहले है अधिकार तुम्हारा
सोचो समझो मेरी बातें और उचित यदि मानो,
तो फिर तुम उनके प्रसाद का भार आप पर जानो।"[2]

महात्मा गांधी हिंसा के विरोधी थे। सियारामशरण गुप्त जी भी हिंसात्मक कार्यों के कारण उत्पन्न युद्ध की समस्या का निदान अहिंसा को ही मानते हैं –

"हिसानल से शांत नहीं होता हिसानल
जो सबका है, वही हमारा भी है मंगल।
मिला हमें चिर सत्य आज यह नूतन होकर
हिंसा का है एक अहिंसा ही प्रत्युत्तर।"[3]

मैथिलीशरण गुप्त ने महात्मा गांधी के अस्पृश्यता निवारण को सैद्धान्तिक रूप से स्वीकार किया। निष्कर्षतः द्विवेदी युगीन हिन्दी कविता ने गांधी विचार दर्शन का हृदय से स्वागत किया। इस युग की कविता में गांधीविचार दर्शन के सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, हरिजनोद्धार, अभय, सर्वोदय आदि तत्त्वों की स्पष्ट अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।

छायावादी काव्य में गांधी दर्शन –

गांधी–विचार–दर्शन का जो बीज द्विवेदी युगीन हिन्दी कविता में अंकुरित हुआ, वह छायावाद तक आते–आते एक पौधे का रूप ले चुका था। इस युग की कविता में अभिव्यंजना, प्रतीक, उपमान, शैली, विचार तथा लक्ष्य आदि सभी पक्षों पर गांधीवाद की चारु–मुद्रा का अंकन दृष्टिगोचर होता है। सुमित्रानंदन पंत की अनेक रचनाओं में गांधीवाद की प्रवृत्तियों का पल्लवन हुआ है। महादेवी वर्मा 'धरा के अमर, तुमको सहस्र प्रणाम' कहकर गांधीजी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं। जयशंकर प्रसाद कृत कामायनी की नायिका श्रद्धा तकली चलाने वाली गांधी–शिष्या है। अहेरी को पशु–बलि से रोकने वाली श्रद्धा गांधीवादी अहिंसा से अनुप्राणित है। इसके अतिरिक्त सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', भगवतीचरण वर्मा तथा हरिकृष्ण प्रेमी की कविताओं में भी गांधी–विचार–दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

अहिंसा गांधीजी के लिए सत्य प्राप्ति का साधन थी। इस अहिंसा में दया, प्रेम, करुणा आदि सभी भाव छिपे थे। गांधीजी की अहिंसा कायरों की अहिंसा नहीं है। उसमें लाखों तलवारों का हँसते हँसते सामना करने की शक्ति है। अहिंसा पर अपनी आस्था प्रकट करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी निःशस्त्र सेनानी शीर्षक कविता में संसार के पलटने पर भी हाथों में तलवार न लेने की बात दोहराते हैं–

''लपकती हैं लाखों तलवार मचा डालेगी हाहाकार।
मारने मरने की मनुहार खड़े हैं बलि पशु सब तैयार।
पलट जायें चाहे संसार न लूँगा इन हाथों तलवार।''[4]

सुभद्राकुमारी चौहान की कविताएँ भी गांधीवादी विचारों से अनुप्राणित है। वे गांधीजी की अहिंसा को ही साध्य और साधन मानती हैं। उनके मतानुसार अहिंसा के मंत्र के सामने बड़े से बड़े अस्त्र निरर्थक हैं –

''वह चली तोप, गल चले टैंक, बंदूकें पिघली जाती हैं
सुनते ही मंत्र अहिंसा का अपने में आप समाती हैं।''[5]

महात्मा गांधी के चरखे के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हुए प्रसादजी कामायनी में श्रद्धा द्वारा अपने पर्ण कुटीर में प्रिय के दूर चले जाने पर तकली चलाते हुए गाने का दृश्य प्रस्तुत करते हैं –

''मैं बैठी गाती हूँ तकली के
प्रतिवर्तन में स्वर विभोर
चल री तकली धीरे–धीरे
प्रिय गये केलने को अहेर।''[6]

सन् 1936 में हिन्दी कविता में प्रगतिवादी विचारधारा का उदय हुआ। गांधी विचारदर्शन का लक्ष्य सामाजिक कुरीतियों का खात्मा, पूँजीवाद व शोषण का अंत तथा पतितों व दलितों का उद्धार था। प्रगतिवादी कवियों की कलम का मूल लक्ष्य भी यही रहा। उन्होंने उदार अन्तर्राष्ट्रीय भावना को प्रश्रय दिया, शोषण का प्रतिरोध किया, वर्गविहीन समाज की परिकल्पना की एवं मानवतावादी आदर्शों की प्रतिष्ठा की, जो गांधीवादी भावनाओं से ओत–प्रोत है। रामधारी सिंह शदिनकरश, सोहनलाल द्विवेदी, नरेन्द्र शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन' रामविलास शर्मा आदि प्रमुख प्रगतिवादी कवि यद्यपि मार्क्सवाद की ओर झुके रहे. तथापि इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से गांधीवाद का मार्ग प्रशस्त किया।

'दिनकर' के विचारानुसार संसार में जब तक सबको बराबर सुख नहीं मिलता, तब तक शांति संभव नहीं है –

''शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख–भाग न नर का सम हो।''[7]

नरेन्द्र शर्मा यद्यपि मार्क्सवादी थे, पर उनकी आस्तिकता ने उन्हें गांधीवादी बना दिया। सुमित्रानंदन पंत की तरह वे भी अहिंसक मार्क्सवादी रहे हैं। उनका मानना है कि गांधीजी ने जिस अहिंसक क्रांति का सूत्रपात किया, वह अद्वितीय और अनूठी है –

''क्रान्तियाँ जग में हुई अब तक कई,
पर अहिंसा क्रांति की संज्ञा नयी शैल नयी।
साध्य–साधक और साधन में न हो व्यवधान
जब, क्रांति तब मंगलमयी करुणामयी।''[8]

प्रयोगवाद और गांधी दर्शन –

प्रगतिवाद के साथ प्रयोगवाद का निकट का सम्बन्ध है। दोनों वादों की कविता में जनजीवन व समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्रयोगवाद की घुटन के मध्य भी गांधी विचारदर्शन का प्रभाव इस युग की कविता में देखने को मिलता है। विचार क्षेत्र में जिन प्रयेगवादी कवियों ने गांधी विचारदर्शन को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपनाया उनमें सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेरबहादुर, भवानी प्रसाद मिश्र, कुँवर नारायण आदि प्रमुख हैं।

''महात्मा गांधी विश्व में अस्त्र–शस्त्र की बढ़ती होड़ को लेकर चिंतित थे। उनका मानना था कि अणु–बमों के बढ़ने से केवल पश्चिम का ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया का विनाश हो जाएगा।''[9]

प्रयोगवादी कविता अणु–युद्ध की इस भीति (भय) को भली–भाँति समझती है। यही कारण है कि वह परमाणु–विखण्डन की विभीषिका को काव्यात्मक स्वर देने से नहीं कतराती। महाविध्वंसकारी अणु–युद्ध मनुष्यता का मरण–पर्व का रूप ले लेता है। इसका वर्णन अज्ञेय शहिरोशिमाश में करते हुए कहते है –

''मानव का रचा हुआ सूरज,
मानव को भाप बनाकर सोख गया।
पत्थर पर लिखी हुई यह
जली हुई छाया,
मानव की साखी है।''[10]

सारांशतः निराशा, अवसाद और अकेलेपन की अभिव्यक्ति, नूतन प्रयोगों की दुरुहता, बौद्धिकता और विचित्र शिल्प शैली में उलझे प्रयोगवादी कवियों के पास गांधी विचारदर्शन की अभिव्यक्ति के लिए अवकाश नहीं था। फिर भी विश्वयुद्ध की सम्भावना के चलते महात्मा गांधी के अहिंसा सम्बन्धी विचार इस युग की कविता में दिखाई पड़ते हैं।

स्वातंत्र्योत्तर कविता में गाँधी चेतना –

बौद्धिकता की छाया में विकसित स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में स्वतंत्रता के बाद गांधीवादी मूल्यों के पतन, विश्व शांति, शोषण, अत्याचार, जात–पाँत आदि के सन्दर्भ में नागार्जुन, प्रेमशंकर, जगदीश गुप्त, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना आदि कवियों की कविताओं में गांधीवादी दर्शन की अनुगूँज सुनाई पड़ती है। महात्मा गांधी ने देश की स्वाधीनता के लिए अपना सर्वस्व होम कर दिया। पर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उनके सिद्धान्तों की धज्जियां उड़ाने में राजनेताओं ने कोई कसर नहीं रखी। गांधीवादी मूल्यों के पतन को देखकर मार्क्सवादी

कवि नागार्जुन का हृदय आहत हुआ। गांधीवादी मूल्यों के पतन के कारण इन तथाकथित राजनेताओं पर व्यंग्य करते हुए नागार्जुन लिखते हैं –

''प्रेम पगे हैं, शहद सने हैं तीनों बंदर बापू के
गुरुओं के भी गुरु बने हैं तीनों बंदर बापू के
सौवीं बरसी मना रहे हैं तीनों बंदर बापू के
बापू को ही बना रहे हैं तीनों बंदर बापू के।''[11]

कवि हृदय अति संवेदनशील होता है। उनके लिए हर क्षण कोई न कोई युद्ध चल रहा होता है। पर यह युद्ध रक्त–रंजित इतिहास नहीं लिखता। यह ऐसा युद्ध है जो वर्तमान विसंगतियों पर प्रहार करते हुए गांधी मार्ग की ओर ले जाकर मानवीय मूल्यों की सृष्टि करता है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की दृष्टि में –

''कितने छोटे हैं वे मोर्चे
उस लड़ाई के आगे
वे सामाजिक चालें
जो इन्सानियत के सन्दर्भ में इन्सान लड़ता है।''[12]

निष्कर्षतः आधुनिक हिन्दी कविता में गांधीवादी दर्शन का प्रारम्भ द्विवेदी युग से हुआ। द्विवेदी युगीन कवि मैथिलीशरण गुप्त, उपाध्यायसिंह हरिऔध, सियारामशरण गुप्त आदि ने गांधीवाद का हृदय से स्वागत किया और गांधी दर्शन के सत्य, अहिंसा, सर्वोदय आदि तत्त्वों को अपनी कविता में उतारा। मैथिलीशरण गुप्त तो गांधी की भाँति सत्य को संसार का मूल धर्म मानते हैं। छायावाद का तो सबसे बलिष्ट स्वर गांधीवाद ही है। गांधी विचारदर्शन के प्रभावस्वरूप छायावाद की वैयक्तिकता सामाजिकता की राह पर चल पड़ी। छायावाद में निराला को छोड़कर शेष सभी कवियों ने गांधी विचारदर्शन को अपने काव्य का विषय बनाया। प्रगतिवादी कवियों ने गांधीवाद को स्वीकार तो नहीं किया पर मानवीय गुणों के विकास के सन्दर्भ में महात्मा गांधी की अहिंसा तथा विश्वबन्धुत्व की भावना का प्रभाव रामधारी सिंह दिनकर, नरेन्द्र शर्मा, शिवमंगल सिह सुमन आदि पर स्पष्ट देखा जा सकता है। इन्होंने मार्क्स की क्रान्तिमूलक समता के साथ–साथ गांधीजी की शांतिमूलक समता को भी स्वर दिया है। प्रयोगवादी कविता में यथार्थ चित्रण और घुटन के बावजूद गांधी विचारदर्शन का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। स्वातंत्र्योत्तर कविता का मूल स्वर भी गांधीवादी मानव मूल्य ही है।

भवानी प्रसाद मिश्र और गांधीवाद –

भवानी प्रसाद मिश्र आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में अपने ढंग के एक विशिष्ट और अनूठे कवि हैं। इन्होंने आधुनिक हिन्दी कविता की अनेक धाराओं से तत्त्व ग्रहण कर अपने लिए एक नई राह विकसित की जो वादों के संकीर्ण और सीमित गलियारों से मुक्त है। सन् 1930 ई. से आरम्भ होने वाली इनकी काव्य साधना में न तो कोई वाद है न दल। इनका व्यक्तित्व सादगी की प्रतिमूर्ति है। जितनी सादगी इनके व्यक्तित्व में है, उतनी ही उनके कृतित्व में भी दिखाई पड़ती है। व्यक्तित्व और कृतित्व की सादगी में समन्वय स्थापित करने वाले भवानी प्रसाद मिश्र एक आदर्श कवि हैं जिनकी आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में अपनी पहचान है. अलग व्यक्तित्व है और अलग स्वाभिमान है।

उनकी रचनाएँ उनका प्रतिबिम्ब है, जिनमें उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व झाँकता हुआ दिखाई देता है। सारांशतः उनका खुला रचना संसार ही उनका खुला परिचय है। गांधी विचारदर्शन की निष्ठा ने भवानी प्रसाद मिश्र के कवि व्यक्तित्व को शब्द और कर्म से जोड़ दिया। इनमें कबीर की भाँति साहस और फक्कड़पन दोनों एक साथ दिखाई पड़ते हैं। इन्हें किसी भी प्रकार का सत्य कहने में भय की प्रतीति नहीं होती। यथा –

''मेरे यहाँ रहन रखी है युगों–युगों से युग की वाणी,
मेरे गीतों में बसती है सत्य–सुन्दरी, माँ कल्याणी।''[13]

भवानी प्रसाद मिश्र के व्यक्तित्व पर गांधी के विचारों का विशेष प्रभाव है। गांधी विचारधारा के प्रभावस्वरूप उनकी रचनाओं में सेह–भाव से गांधी विचारों को अभिव्यक्ति मिली है और यह तब संभव हुआ जब भवानी प्रसाद मिश्र ने गांधीवादी दर्शन को विचार के स्तर से उठाकर अनुभव के स्तर पर उतारा है। यही कारण है कि गांधी के सत्य और अहिंसा के प्रति उनका आग्रह उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में बराबर परिलक्षित होता रहा है। कृष्णदत्त पालीवाल के अनुसार सम्पूर्ण काव्ययात्रा में गांधी विचार दर्शन की इतनी निष्ठा से साहित्य में प्रतिष्ठा करने वाला उनकी तरह का कोई दूसरा कवि नहीं है। फिर समकालीन कविता के नये कवियों में तो गांधी विचारधारा को सम्पूर्ण आस्था से काव्य आचरण में ढालने वाला ऐसा कवि दुर्लभ है।[14] भवानी प्रसाद मिश्र को गांधी के विचारों ने बनाया है। गांधीवाद केवल भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं तक सीमित नहीं था। जीवन के हर स्तर पर वे गांधीवादी थे। उनके जीवन की अनेक घटनाएँ उन्हें गांधीवादी सिद्ध करती हैं। ऐसी ही एक घटना उनके विवाह के समय की है जिसका उल्लेख भवानी प्रसाद मिश्र रचनावली के सम्पादक विजय बहादुर सिंह ने भवानी प्रसाद मिश्र रचनावली की भूमिका वे तो अपनी राह चल रहे थे में करते हुए लिखा है उन दिनों दूल्हे पालकी पर चढ़ कर जाते थे जिनमें पालकी को ढोने वाले कहारों के कंधे लगते थे। भवानी भाई दूल्हे के रूप में इस प्रकार की सवारी के लिए तैयार नहीं हुए। एक व्यक्ति सज–धज कर बैठे और चार आदमी उसे बैल की तरह दोएँ यह किसी भी स्थिति में शोभाजनक कैसे हो सकता है। परिवार के लोगों और नाते रिश्तेदारों के बीच इस इनकार को लेकर काफी खलबली मची। भवानी प्रसाद मिश्र अंततः द्वार पूजन के लिए सारे बारातियों के साथ पैदल ही गए पालकी लौटा दी गई।[15]

महात्मा गांधी के विचारों को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने बच्चों को शिक्षा देने के विचार से एक विद्यालय खोला। गांधीजी के विचारों और कार्यों से जुड़कर वे उनके बारे में निरंतर लिखते रहे। ''गांधी उनके लिए भविष्य नहीं, वर्तमान हैं। गांधी की आँखों में देश का एक मधुर स्वप्न था, जिसे गांधी ने खुली आँखों से देखा था और जो एक हद तक साकार भी हो रहा था। लगभग एकदम सूख चुकी बंजर दुनिया को गांधी ने प्रेम से सींचकर हरा–भरा कर दिया था। प्रेम का यही हरापन भवानी प्रसाद मिश्र की कविता है।''[16]

भवानी प्रसाद मिश्र ने अत्यंत श्रद्धा से गांधी विचारदर्शन को अपने काव्य का विषय बनाया। गांधी के प्रति अपनी अटूट श्रद्धा को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है –

''बापू अगले बरस तुम्हार फिर जन्म दिवस आएगा
अगले बरस तुम्हारा चारण गीत तुम्हारे फिर गायेगा।''[17]

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः भवानी प्रसाद मिश्र को गांधी के विचारों ने बनाया है। वे एक विशिष्ट जीवन दर्शन के कवि हैं। यह जीवन दर्शन उनके व्यक्तित्व में इतना रच–पच गया है कि उनका पोर पोर और उनकी कविता का शब्द शब्द उससे ही हिल मिलकर रचनात्मकता में ढलने लगा। आजीवन गांधी विचारधारा से सम्बद्ध संस्थाओं में कार्य करने के कारण उनके व्यक्तित्व में यह धारणा प्रौढ़ होती गई कि हमारी अपनी जमीन में पनपी गांधीवादी विचारधारा ही इस देश को नई दिशा और दृष्टि दे सकती है।

संदर्भ –

1 गुप्त, मैथिलीशरण, साकेत, साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी, पृष्ठ 53
2 गुप्त, मैथिलीशरण, द्वापर, साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी, पृष्ठ 56
3 गुप्त, सियारामशरण, उन्मुक्त, साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी, पृष्ठ 157
4 चतुर्वेदी, माखनलाल, हिमकिरीटिनी, निःशास्त्र सेनानी, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 94
5 द्विवेदी सोहनलाल, (संपादक), गांधी अभिनंदन ग्रंथ, गांधी अभिनंदन ग्रंथ कार्यालय, लखनऊ, पृष्ठ 22
6 प्रसाद, जयशंकर, कामायनी, इडा सर्ग, भारती भंडार, इलाहाबाद, पृष्ठ 162
7 दिनकर, रामधारी सिंह, कुरुक्षेत्र, उदयांचल, पृष्ठ 25
8 शर्मा, नरेन्द्र, रक्तचंदन, भारती भंडार, इलाहाबाद, पृष्ठ 13
9 गांधी, महात्मा, मेरे सपनों का भारत, राजपाल एंड संस, दिल्ली, पृष्ठ 254

10 अज्ञेय – हिरोशिमा, सदानीरा भाग 2, पृष्ठ 65
11 शिवरंजन (संपादक), फिर फिर नागार्जुन शिल्पायन, तीनों बंदर बापू के, पृष्ठ 110
12 www.hindi.mkgandhi.org/gmarg/chap21.htm.date25jan,2014
13 सिंह विजय बहादुर, (संपादक), भवानी प्रसाद मिश्र, रचनावली, अनामिका पब्लिकेशन, खंड 1, पृष्ठ 13
14 पालीवाल, कृष्णदत्त, भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 9
15 सिंह, विजय बहादुर, (संपादक), भवानी प्रसाद मिश्र, रचनावली, अनामिका पब्लिकेशन, खंड 1, भूमिका, पृष्ठ xiii
16 पालीवाल, कृष्णदत्त, भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य संसार, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 33
17 सिंह, विजय बहादुर (संपादक), भवानी प्रसाद मिश्र, रचनावली, अनामिका पब्लिकेशन, खंड 1, लिखूँ कि कातूँ, पृष्ठ 202